मनुष्य बनो

11/74

बा०म०
५-२५

शुभ संकल्प,

प्रेम,

ब्रह्मचर्य पालन,

कर्म,

फकीरचन्दजी महाराज

ना मन्दिर होशियारपुर (पंजाब)

'मनुष्य बनो' के नियम

१—शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिकता के नियमों का वास्तविक दृष्टिकोण से प्रचार करना और प्रेम, सभ्यता, आदर, शिष्टाचार, सदाचार सहनशीलता और संयम की शिक्षा देना इसका मुख्य उद्देश्य है। मनुष्य बनना और बनाना।

२—सन्त महात्माओं और ऋषियों की वाणी को सरल, सुबोध और साधारण भाषा में प्रचार करना।

३—सामाजिक उन्नति कारक तथा देशहित कारक लेखों को भी स्थान दिया जायगा।

४—किसी धर्म, पंथ या सम्प्रदाय के खण्डन सम्बन्धी लेख नहीं छापे जायेंगे।

५—यह पत्र प्रत्येक मास की १५ तारीख को प्रकाशित हुआ करेगा।

६—लेखों के घटाने बढ़ाने और छापने न छापने का अधिकार सम्पादक को होगा। लेख सम्पादक के नाम भेजे जांय।

७—ग्राहकों को पत्र लिखते समय ग्राहक नम्बर व पता साफ साफ अवश्य लिखना चाहिये। उत्तर के लिये जवाबी कार्ड आना चाहिये। वी०पी० पी० से पत्रिका नहीं भेजी जायगी। इसका वार्षिक मूल्य ५-२५ है।

८—यदि किसी मास का पत्र ठीक समय पर न पहुँचे तो पहले अपने यह डाकखाने से पूछताछ करके वहां से जो उत्तर मिले वह अगला अंक निकलने से एक सप्ताह पूर्व तक कार्यालय में पहुंचने पर ही दूसरी प्रति बिना मूल्य भेजी जा सकेगी।

९—प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र, ग्राहक होने की सूचना, मनीआर्डर आदि मैनेजर के नाम से भेजने चाहिये। मनीआर्डर कूपन पर अपना पता साफ साफ लिखना चाहिये। और पते की तबदीली भी।

देवीचरन मीतल

सम्पादक

ओ३म् पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्ण मदुच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्ण मेवावशिष्यते ॥

❋ मनुष्य बनो ❋

वर्ष २५ | कार्तिक सं० २०३१ वि० नवम्बर १९७४ | संख्या २

चेतावनी

मन पछितैहै अवसर बीते ।
दुर्लभ देह पाइ हरि पद भजु, करम वचन अरु हिय ते ।
सहसबाहु दसबदन आदि नृप, बचे न काल बली ते ।
हम हम करि धन धाम संवारे, अब चले उठि रीते ॥
सुत बनितादि जानि स्वारथ रत, न करु नेह सब ही ते ।
अन्तहु तोहि तजेंगे पामर, तू न तजै अब ही ते ॥
अब नाथहि अनुराग जागु जड़, त्याग दुरासा जी ते ।
बुझै न काम अगिन तुलसी कहुं, विषय भोग बहु घी ते ॥

तुलसी या जग आयके, कर लीजे दो काम ॥
देने को अन्न दान है, लेने को हरि नाम ॥

दीपावली के शुभ अवसर पर हमारी शुभ कामनायें

मनुष्य बनो का चन्दा अब ५)२५ रु० है।

परमदयाल फकीरचन्द जी महाराज की आज्ञा से अब इसका चन्दा इस वर्ष से ५)२५ होगया है। यद्यपि इससे इसके खर्चे की पूर्ति कठिन है मगर उनकी आज्ञा सर्वोपरि है। अब हमारी ग्राहकों से प्रार्थना है कि वे इस वर्ष का चन्दा तथा जिन पर पिछले वर्ष का चन्दा बाकी है वह तुरन्त भेज दें ताकि इसके काम में बाधा न हो। साथ ही प्रत्येक ग्राहक का कर्तव्य है कि इसके प्रचार में हमारा हाथ बटावें और इसके अधिक से अधिक ग्राहक बनावें। अभी तक दो-चार प्रेमी जन ही ऐसे हैं जो इसके ग्राहक बनाने में जी जान से लगे रहते हैं। यह उनकी निष्काम सेवा है। मालिक उनका कल्याण करे।

—देवीचरन मीतल
व्यवस्थापक

शिव शब्द सागर (दो भाग)महर्षि शिवब्रतलाल जी महाराज के शब्दों का संग्रह। मूल्य प्रत्येक भाग ७) रु०, दोनों भाग के १४) रु० डाक खर्च ३) अलग।

दयाल फकीर की जीवनी (फोटो सहित) मूल्य २)५० डाक खर्च १)५० अलग। मय डाक खर्च ४) रु०।

व्यवहार सुधार

प्रत्येक व्यक्ति बचपन से ही मां बाप से तथा कुछ पूर्वले कर्मानुसार कुछ संस्कार लेकर संसार में आता है और बचपन से ही ऐसे कार्यों व विचारों की ओर उसका रुझान होता है। आगे चलकर उस पर कुछ प्रभाव संगत और समाज का पड़ता है, कुछ देखकर, सुनकर तथा पुस्तकों के पठन पाठन का पड़ता है। इन कारणों से किसी ओर उसकी धुन लग जाती है और वैसे ही उसकी आदत बन जाती है। यदि सौभाग्य से संगत अच्छी मिल गई तो प्रभाव अच्छा होता है और कुसंगत में पड़ गया तो उसका प्रभाव बुरा होता है। यह कुछ ऐसी बातें हैं जो जीवन पर्यन्त तक बनी रहती हैं और मनुष्य उन्हीं के चक्कर में घूमता रहता है।

यदि कोई भारी आपत्ति आजाय, रोग हो जाय अथवा सौभाग्य से कोई सच्चा सन्त महात्मा मिल जाय तो उसके सद्वचनों से भी विचारों में परिवर्तन आजाता है और वह अपने कुकर्मों पर पछताता है और सुकर्म करने की ओर ध्यान देता है। तुलसीदास ने भी एक जगह लिखा है :—

मूरख हृदय न चेत, जो गुरु होय विरंचि सम।

दूसरी जगह कहा गया है :—

शठ सुधरहिं सतसंगत पाई॥

इनसे उनका क्या भाव है यह तो वह जानते होंगे मगर 'मूरख' उसे कहते हैं जिसमें समझ ही न हो या बहुत कम हो जो बात को ठीक प्रकार समझ न सके। ऐसे व्यक्ति का सुधार असम्भव कहा है। 'शठ' का अर्थ है कि वह बात को समझने की शक्ति रखता है। इसलिये समझ रखने वाले आदमियों के लिये जो कुमार्ग पर चल रहे हैं अथवा जिनमें बुरी आदतें पड़ गई हैं उनके लिये सत्संग, सत्गुरु और सद्ग्रन्थों का स्वाध्याय बताया गया है। इसलिये प्रत्येक व्यक्ति को अपने सुधार के लिये उपरोक्त तीन बातों के ओर ध्यान देना चाहिये। कुछ तो ऐसे व्यक्ति होते हैं जिन पर प्रभाव शीघ्र

हो जाता है और जीवन पलट जाता है मगर ऐसे भी लोग है कि सत्संग आदि से कुछ संस्कार विचार तो मिल जाता है मगर अपनी आदतों से मजबूर होकर सुधार की ओर बहुत थोड़ा ध्यान देते हैं अर्थात् आदतों के कारण शीघ्र सुधार करने में विवश होते हैं।

यहां इतना कह देना परम आवश्यक है कि संत मार्ग में सबसे पहिला साधन सुमिरन है। सुमिरन का अर्थ और भाव यही है कि किसी नाम या बात को बार बार स्मरण किया जाय। यह हम अपने कामों में रात दिन करते रहते हैं। इसलिये हम जिस शुभ गुण को ग्रहण करना चाहते हैं उस का बार बार सुमिरन करना चाहिये। इससे उस शुभ गुण के संस्कार दृढ़ होते चलेंगे और पुराना अवगुण या पुरानी आदत स्वयं छूटने लगेगी। इसी लिये सुमिरन की बड़ी भारी मुख्यता है। हमको बुरी बातों को याद करने की आदत को छोड़ना चाहिये तथा निराशाजनक खयालों को भी कभी मन में नहीं आने देना चाहिये। तब कुछ समय में आप स्वयं प्रतीत करेंगे कि आपके जीवन में परिवर्तन होरहा है।

आलू की नयी किस्म–'कुफ़ोदेवा'

भारी पैदावार तथा ज्यादा मुनाफ़ा

शिमला स्थित केन्द्रीय आलू अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिकों ने पंतनगर स्थित गोविन्दबल्लभ पंत विश्वविद्यालय के सहयोग से प्रति हैक्टर ३०० से ३४० क्विंटल तक पैदावार देने वाली आलू की एक नयी किस्म कुफ़ोदेवा (सी-३८०४) निकाली है।

इस किस्म को पैदावार लेने के लिये प्रति हैक्टर क्रमशः १५० किलो नाइट्रोजन, १०० किलो फास्फोरस और १०० किलो पोटाश डालने की आवश्यकता पड़ती है। इसको अगेती अंगमारी विषाणु पत्तीमोड़ रोग तथा पाले का भय नहीं और बिना शीत भंडार के ५-६ माह तक आलू सुरक्षित तथा बीज ५-६ वर्ष सुरक्षित रह सकता है। [कृषि मंत्रालय]

हरिपालजी की कथा

हरपाल जी जाति के ब्राह्मण और परम भक्त थे। साधू सेवा की यह दशा थी कि पहले तो घर का सारा माल असवाब इसी में बिक गया फिर ऋण से काम चलाने लगे। जब उधार मिलना भी कठिन होगया तो चोरी करने लगे। जिसको तिलक लगाये और कण्ठी माला पहिने देखते उसके पीछे पड़ जाते, प्रेम दिखाते, सेवा करते उसके दर्शन से अपना जीवन सुफल करते। अब इनका नाम निष्कंचन पड़ गया।

एक दिन इनके घर साधुओं की मण्डली आई।" उन्हें सत्कार के साथ आसन दिया। पाँव धोये और खाने पीने की सामग्री लेने के लिये बाहर निकले। बड़ी युक्तियां सोची परन्तु कुछ भी हाथ न लगा, तब महा दुखी हुये। जब उदासी बहुत बढ़ गई एक साहूकार अपनी स्त्री को साथ लिये हुए मिला। उसने कहा "तुम हमको सामने के गांव तक पहुंचा दो।" ये बोले "एक रुपया लूँगा।" उसने एक रुपया दे दिया। यह धनुष बाण लिये हुये साथ चले, थोड़ी दूर जाने पर सोचने लगे 'बनिया मोटा और धनवान है, यह भक्त नहीं प्रतीत होता है। तिलक और माला भी नहीं रखता। इससे धन छीन लेना चाहिये। यह धन द्रव्य इसके किस काम का है। यह सब साधु सेवा में लगना ही अति उत्तम है।" फिर कमर से तलवार खींच कर बोले "जो कुछ पास है रख दे नहीं तो अभी दो टुकड़े कर दूँगा।" बनिया डर के मारे कांपने लगा और बोला "लो, सब कुछ ले लो, तंग मत करो।" इन्होंने गहने रुपये सबके सब ले लिये। उसकी स्त्री के हाथ में एक छल्ला रह गया। उसे भी यह हाथापाई करके लेना चाहते थे। स्त्री बोली 'निर्दयी! तुझ में नाम मात्र भी दया नहीं है। एक छल्ला भी पास नहीं रहने देता।" उन्होंने कहा 'चल बावली! दूर हो। तेरा पति कंगाल नहीं है। यह सौ छल्ले

बनवा देगा। उसी धन को धन समझना चाहिये जो भक्तों के काम में आये नहीं तो वह मिट्टी के तुल्य है।"

इतना मुँह से निकलना था कि वह दोनों साहूकार और साहूकारनी श्री कृष्ण और रुक्मिणी के रूप में प्रगट हुये। इनको गले से लगाया और राज भक्त की पदवी देकर बोले "धन्य है तुम्हारी साधु सेवा! जाओ, इस भाव को और भी दृढ़ करते चलो। मैं मन के भाव का भूखा हूं। कर्म धर्म को नहीं देखता। केवल सच्चाई और भाव की ओर मेरी दृष्टि रहती है। अब तुम्हें कोई चिन्ता न व्यापेगी। साधु सेवा के प्रताप से तुम को सहज में दर्शन मिल गया।"

यह घर लौट आये। साधुओं को अपनी सेवा से प्रसन्न किया। उस दिन से कृष्ण भगवान के प्रेम में मग्न रहने लगे और अन्त में कृष्ण लोक को सिधारे।

——०——

शब्द

जो मेरा मैं भी हूं उसका, मानूँ प्रेम का नाता।
जिन में मेरा प्रेम नहीं है, उनके ढिग नहिं जाता॥
छल चतुराई काम न आवे निष्फल बुद्धि बिलासा।
प्रेम भाव जब घट में आवे, अन्तर होय उजासा॥
मेरा रूप नहीं है कोई, मेरे रूप हैं सारे।
जो जिस रूप से मुझको माने, रहे उसी के सहारे॥
दर्शन दूँगा उसी रूप में, उसीसे पार लगाऊँ।
काल कर्म का दुख नहिं व्यापे, सहजहि फन्द कटाऊँ॥
राधास्वामी ने मुझे चिताया, करूँ साध की सेवा।
साध रूप का दर्शन निस दिन, साध हैं सच्चे देवा॥

प्रवचन

परम दयाल फकीर चन्द जी महाराज

मानवता मन्दिर होशियारपुर १३ मई १९७४

सूबेदार त्रिलोकसिंह का चौबरस

शब्द

मंगलम अशब्द रूप, शब्द रूप स्वामी ।
मंगलम् अलख अनाम, अगम नाम स्वामी ॥
मंगलम् ऐ दीनबन्धु, दीनानाथ दाता ।
मंगलम् अभेद भेद, आनन्दघन त्राता ॥
महिमा अनन्त आदि, अन्त कौन गावे ।
भेद तेरा कौन जाने, कौन कह सुनावे ॥
सन्त भेष प्रगट जगत, जीव को चिताया ।
काल करम फन्द काट, धुर ले पहुंचाया ॥
प्रथम तत्व निज स्वरूप, पद कमल नमामी ।
गाऊँ ध्याऊँ रात दिवस, भजूँ राधास्वामी ॥

आज सूबेदार त्रिलोचनसिंह को मरे हुए चार वर्ष होगये हैं। कल उनकी स्त्री आई और कहने लगी कि बाबा जी उनका चौबरस आया है। वह आपसे प्रेम करते थे। इसलिये आप उनका चौबरस कर देवें।

मैं रात को मकान पर बैठा हुआ सोचता रहा कि क्या श्राद्ध या क्रिया कर्म या चौबरस मरने वाले का भला कर सकते हैं? हिन्दू इस बात को मानते हैं कि सूक्ष्म शरीर जब स्थूल शरीर से निकल जाता है तो जब तक दूसरा चोला नहीं लेता वह ऊपर रहता है। कोई प्रमाण तो इसका है नहीं, केवल थ्यौरी या अनुमान ही है। मैं

चूंकि हिन्दू धर्म में पैदा हुआ हूं और इसी धर्म के मन पर संस्कार हैं इसलिये मैं इसको मानता हूं। अब तो वर्तमान साइंस भी इस इस बात को मानती है। तजुर्बे के लिये एक डाक्टर ने एक मरने वाले आदमी को एक हवाबन्द (Airtght) शीशे के कमरे में बन्द कर दिया ताकि वह देखसके कि मरने के बाद क्या कोई वस्तु शरीर में से निकलती है ? जब वह आदमी मर गया तो वह शीशा टूट गया। इससे सिद्ध हुआ कि मरने क बाद शरीर में से कोई वस्तु निकल कर जाती है। स्विटजर लेंड के एक डाक्टर ने भी एक रोगी को मरने वाला था उसका किसी मशीन से तोल की और मरने के बाद फिर तोला तो २१ ग्राम कम हुआ। उस डाक्टर ने लिखा कि आत्मा का भार २१ ग्राम है।

मुसलमान आवागवन को नहीं मानते किन्तु यह तो मानते हैं कि चोला छोड़ने के बाद आत्मा प्रलय तक कब्र में रहती हैं। प्रलय के दिन जब उसका हिसाब किताब हो जाता है तब कब्र से चली जाती है। इससे सिद्ध हुआ कि मुसलमान भी इस बात को मानते हैं कि शरीर में से कोई वस्तु निकलती है।

सोचता हूं कि मृत्यु के बाद जीव की क्रिया कर्म करने या श्राद्ध करने से उसकी आत्मा को कोई लाभ भी पहुँचाता है या ब्राह्मणों ने रुपया कपड़ा आदि लेने के लिये एक पाखंड का जाल बना रक्खा है।

जब आदमी सोजाता है तो उसको अपने शरीर का होश नहीं रहता किन्तु सूक्ष्म शरीर जगह जगह घूमता रहता है। इससे सिद्ध हुआ कि मनुष्य की आत्मा अपने कर्मानुसार अपने शरीर से निकल कर फिरती रहती है। आत्मा शरीर से निकल कर कहां रहती है ? रेखो ! मेरे हाथ में रुई हैं। इसको छोड़ देता हूं तो जिस ओर इसको वायु ले जायगी, यह उसी ओर जायगी। यदि यह भारी होगी तो नीचे की ओर जायगी। यदि हल्की होगी तो ऊपर की ओर जायगी।

ऊपर की ओर जायगी। ऐसे ही जब हमारी आत्मा शरीर से निकल जाती है तो यदि उसका सम्बन्ध साँसारिक वस्तुओं से है तो आत्मा भारी होगी और पृथ्वी की आकर्षण शक्ति उसको अपनी ओर खींचेगी। इसीलिये यमराज का लोक दक्षिण की ओर बताते हैं। क्यों ? आप ग्लोब (पृथ्वी के गोला आकार) को अपने सामने रक्खो तो उसके ऊपर की ओर उत्तर और नीचे की ओर दक्षिण, दाईं ओर पूर्व और बाईं ओर पश्चिम माना जाता है। जिस आत्मा का सम्बन्ध सांसारिक वस्तुओं से अधिक है, वह भारी होती है और भारी हमेशा नीचे की ओर जाती है। नीचे की ओर दक्षिण है। इसलिये कहा गया है कि यमराज लोक दक्षिण की ओर है। इसी कारण शायद ऋषियों ने यह रिवाज चलाया हो कि मरते समय जीव को दीपक दिखाया जाता है ताकि उसको प्रकाश की याद आजाय और वह ऊपर की ओर चला जाय।

सूक्ष्म शरीर अपनी वासनाओं के अनुसार जहां उसका सम्बन्ध होता है वहां जन्म लेता है। कई बार सोचता हूं कि आत्मा कैसे लौट कर जन्म लेती है। शास्त्र क्या कहते हैं मुझे पता नहीं मगर एक बात समझ में आती है कि चुम्बक पत्थर लोहे को अपनी ओर खेंचता है लेकिन जो वस्तु या जो शक्ति लोहे को खेंचती है, क्या वह किसी को दिखाई देती है ? नहीं, लेकिन चुम्बक शक्ति लोहे को खेंच कर अपने साथ मिला लेती है। ऐसे ही सूक्ष्म शरीर की वासना की चुम्बक शक्ति अपने अनुकूल आत्मा को अपनी ओर खेंचलेती है और वह जन्म लेती हैं। फिर वही वासना अन्तर में अर्थात् पैदा होने वाले बच्चे पर प्रभावित होती है मगर इसका कोई प्रमाण मेरे पास नहीं है किन्तु मेरी बुद्धि इस सिद्धान्त को मानती है। चूंकि इच्छा, वासना या विचार की शक्ति काम करती है इसीलिये हो सकता है कि ऋषियों नेय ह क्रिया कर्म या वर्षी या चौबरस का रिवाज चलाया हो। इस अवसर पर मरने वाले की जो मन पसन्द

वस्तुयें होती थीं वह दी जाती थीं और उनका भाव काल्पनिक रूप से उस तक पहुंचता है। फिर उससे (ख्याली तौर से) यह कहा जाता था कि अब तेरा और हमारा कोई सम्बन्ध बाकी नहीं रहा किन्तु तिनका तोड़ दिया जाता था। तिनका तोड़ने का भाव यह है कि अब तेरे और हमारे सम्बन्ध समाप्त होगये। मुझे याद है कि जब मैंने पहिली स्त्री का क्रिया कर्म कराया था तो आचार्य ने मेरी स्त्री का जौ के आटे का एक पुतला बनाया था और मुझसे कहा था कि इसका सिर काट दो और मैंने काट दिया। फिर उसको बांह काटी आदि आदि। मुझे नहीं पता कि इससे उनका क्या भाव है मगर मैं यह समझता हूं कि ऐसा करने से उस सूक्ष्म शरीर को यह पता लगे कि अब इनको तेरे साथ कोई मोह नहीं है। तुम भी इसके मोह से निकल जाओ। बुद्धि इस बात को मानती है।

अब मैं सोचता हूं कि वर्षी का रिवाज ऋषियों ने क्यों शुरू किया ? शरीर छोड़ने के बाद आत्मा पितृ लोक में चली जाती है और जिस आत्मा ने फिर जन्म लेलिया वह पितृ लोक से निकल जाती है। उसकी वर्षी नहीं होना चाहिये। कई आदमी प्रश्न करेंगे कि क्या पितृ लोक है। हां, है। जैसे यह हमारी दुनियां है इसमें स्थूल वस्तुयें हैं, आदमी हैं, पशु हैं और अनेक पदार्थ हैं, ऐसे ही और भी बहुत से लोक लोकान्तर हैं। चन्द्रलोक में, मंगल में आपको मनुष्य नहीं मिलेंगे। विशेष विशेष प्रकार की रचनायें विशेष विशेष लोकों में पाई जाती है। ऐसे ही देशों की दशा है। किसी देश में कोई वस्तु अधिक है और किसी में कोई। शास्त्र कहते हैं कि चोला छोड़ने के बाद आत्मा (रूह) चन्द्रलोक में चली जाती है। मेरे विचार में चन्द्रलोक ही पितृलोक है। यह मेरा अनुभव है और यह ठीक है। मैंने एक पुस्तक 'आकाशी रचना' लिखी थी। उसमें लिखा था कि वहां मनुष्य नहीं हैं। वहाँ सूक्ष्म प्रकृति है। अब जो आदमी चन्द्रमा पर गये थे और वहां से मिट्टी लाये थे उसकी जाँच

करके पता चला है कि उसमें उत्पन्न करने की शक्ति है। वहाँ से आत्मायें वापिस आती हैं। जब एक वर्ष के बाद पृथ्वी अपना चक्र पूरा करती है तो पृथ्वी का वह भाग जहां से वह आत्मा निकली थी वह पितृ लोक के सामने आजाता है। उस समय उस आत्मा के लिये जो कुछ सोचा जायगा वह विचार वहां पहुंच जायगा और उसके विचार को गति देगा। इस बात को बुद्धि मानती है। कैसे ? हमारे समाचार चन्द्रमा तक पहुंच जाते हैं और चन्द्रमा के पृथ्वी तक पहुँच जाते हैं। कोई तार तो लगे होते हैं नहीं, यह भी नहीं कि वायु के द्वारा जाते हैं क्योंकि वायु तो कुछ दूर तक ही है, उससे आगे वायु भी नहीं है। वायु मण्डल में यह शक्ति है। जब बिजली की किरणें वहां जा सकती हैं, तो हमारे विचार की धारें भी वहां जा सकती हैं।

इसका एक और प्रमाण सुनो। जब महाराजा युधिष्ठर ने यज्ञ किया तो प्राचीन आत्माओं के लिये आवाहन किया और वह आत्मायें कोई किसी लोक से और कोई किसी लोक से आईं। इसका एक और प्रमाण टैली पैथी है। न्यूटन की थ्यौरी सिद्ध करती है कि हमारे शरीर की कोई भी गति ऊपर के लोकों तक जाती है और वहां से लौट कर उसी जगह प्रभाव करती है जहां से वह गति शुरू हुई थी। सिद्ध हुआ कि यदि हम किसी विशेष समय पर मरे हुये के लिये शुभ भावना देते हैं तो टैलीपैथी के सिद्धान्त के अनुसार उसके सूक्ष्म शरीर पर भी परिवर्तन आना अनिवार्य है। एक और प्रमाण सुनो। आज कल मैस्मेरिज्म के द्वारा इलाज का एक ढंग निकला है। बीमार कहीं बैठा है और इलाज करने वाला कहीं बैठा है वह अपने विचार से वहीं बैठा हुआ उसका इलाज करता है और रोगी को लाभ पहुंच जाता है किन्तु ऐसे आदमी बहुत कम हैं। इससे सिद्ध होता है कि शायद इन्हीं सिद्धान्तों पर ऋषियों ने क्रिया कर्म का रिवाज चलाया हो।

चौबरस किस सिद्धान्त पर किया गया ? मुझे मालूम नहीं। जो कुछ मैं अब कह रहा हूं इसका भी मुझे कोई दावा नहीं लेकिन यह बात अवश्य है कि पृथ्वी सूर्य के चारों ओर ३६५ दिन में चक्र पूरा करती है। चौथे वर्ष में ३६६ दिन होते हैं। हो सकता है कि चौथे वर्ष पृथ्वी घूमती हुई ठीक उसी जगह आजाय जहां वह पहिले थी। इसीलिये शायद यह चौवर्ष का रिवाज ऋषियों ने चालू किया हो।

आज सूबेदार त्रिलोचनसिंह का चौ वर्ष है। तुम लोग उसके रिश्तेदार हो। वास्तव में ख्याल तो तुम्हारा पहुंचना चाहिये। एकान्त में बैठ कर अपने मन को एकाग्र करके उसका ध्यान करो और उसे सच्चे हृदय से शुभ भावनायें दो। यदि वह इस समय तक पितृलोक में है तो उसको अवश्य लाभ पहुंचेगा। यदि उसने जन्म ले लिया है तब कोई लाभ नहीं। चूंकि किसी को मरने वाले का पता नहीं कि कहां गया, इसलिये ऋषियों ने सब के लिये क्रियाकर्म बना दिया। मैं तो यह कहूंगा कि ऐ त्रिलोचनसिंह ! तू मेरा मित्र था या भाई था या तू मुझे गुरु मानता था, यदि इस समय तक तेरी आत्मा पितृलोक में मौजूद है तो अपने घर चलाजा। मैं तुमको शुभ भावनायें देता हूं।

कल इन लोगों ने कहा कि उनका चौवर्ष है। आप उससे प्रेम करते थे। आप उनका चौ वर्ष करें। उन्होंने रुपये कपड़े दिये। प्रशाद बनाया। यह देने लेने की जितनी बातें हैं यह संसार में अपने मान के लिये हैं लेकिन मरने वाले को वह वस्तुयें देनी चाहिये जिससे जीवन में उसे प्यार रहा हो। पिछले समय में तो युवा स्त्री जब मर जाती थी तो उसके लिये सुहाग के कपड़े और जेवर देते थे। युवकों को उनके मन पसन्द वस्तुयें दी जाती थीं। मेरे पिताजी को भैंस से बहुत प्रेम था। मैंने उनसे एक वार कहा कि पिताजी ! मेरे पास तो पैसा है नहीं इसलिये मैं आपका क्रिया कर्म नहीं करा-ऊँगा। वह तो राय साहब करायेंगे। मैं तो आपको भैंस दूँगा

क्योंकि आपको भैंस से बड़ा प्यार है। वह बड़े नाराज होगये मगर मैंने उनकी बात का बुरा नहीं माना।

क्रिया कर्म का सिद्धान्त तो बिल्कुल ठीक है लेकिन आज तो यह रस्म बन गई है। असलियत का किसी को पता नहीं। जो पहिले मरे हुये हैं, उनको शुभ भावनायें दो। मैं सूबेदार त्रिलोचनसिंह को शुभ भावनायें देता हूं कि वह अपने घर पहुंच जाय।

सन्तों का क्रिया कर्म नहीं किया जाता। सन्यासियों में भी क्रिया कर्म का रिवाज नहीं। क्यों ? चूंकि सन्त मन की अवस्था से उपर रहते हैं और उनको सतगुरु अर्थात सतज्ञान प्राप्त होता है इसलिये उनका क्रिया कर्म नहीं रक्खा गया। यही बात सन्यासियों के बारे में समझी जाती है। क्रिया कर्म उनके लिये नहीं है जिनको सतगुरु और सतज्ञान प्राप्त है लेकिन राधास्वामी मत वालों ने सबका ही क्रया कर्म करना बन्द कर दिया है। यह ठीक नहीं है।

सावन आया मास दूसरा, सास मरी धर आया सुसरा ॥

सास है हमारी शारीरिक शक्ति। अब उसको पुरानी बातें याद आती हैं। सबकी यही दशा है। हमारे साथ पता नहीं क्या हो ! जब शरीर दुर्बल हो जाता है तो मन बलवान हो जाता है और उस पर जो संस्कार पड़े हुये हैं वह जाग उठते हैं।

काली घटा श्याम मन हुआ।
श्याम कुंज में यह मन मुआ ॥

श्याम है अँधेरा। शरीर कमजोर हो जाता है और मन में ज्ञान नहीं होता तो फिर मन तरह तरह की बातें करता है।

गरजे बादल चमके बिजली।
मंसा मोड़ी आसा बदली ॥

जो पहिले पड़े हुये संस्कार होते हैं वह अन्त समय पर या बुढ़ापे की कमजोरी के कारण सामने आजाते हैं। पुरुषोत्तमदास यद्यपि बड़ा ज्ञानी है और अभ्यासी भी है मार शारीरिक कमजोरी के

कारण पुराने विचार जो मन पर पड़े हुये हैं वह सामने आरहे हैं।

सुरत निरत की झड़ियाँ लागीं ।
धुन अनन्त से चाली ।।
वृद्धावस्था चेतन लागी ।
काल आय जब सिर पर गाजी ।।

जब अधिक बुढ़ापा आजाता है या मृत्यु का समय निकट होता है तब यह दशा होती है।

जमपुर से अब आमे सतगुरु राखें ।
बहुतक जीव मौत दर ताके ।।

इसलिये सन्त कहते हैं कि मन के चक्र से बचाने वाला केवल सतगुरु है। सतगुरु कैसे बचाता है ? सतगुरु नाम है सच्चे ज्ञान का।

सुनो अफ्रीका वालो ! तुम मुझको अफ्रीका ले जाना चाहते हो। क्या करोगे मुझको वहां लेजाकर ? आठ हजार रुपया एक आदमी का आने जाने का खर्चा है। मेरे साथ एक आदमी और भी होगा। कुछ अन्य खर्च भी होंगे। लगभग बीस हजार रुपया आपका खर्च होगा। मैं नहीं चाहता कि आप लोग इतना खर्च सहन करें, तुम लोग यदि बात को समझ जाओ तो फिर मुझे बुलाओ या न बुलाओ, तुमको गुरु प्राप्त हो जायगा। यदि मेरी बात को नहीं समझोगे तो फिर व्यर्थ जितनी बार चाहे मुझे ले जाओ फिर तुम्हारी कोई भी सहायता नहीं कर सकता, क्योंकि सहायता तो सतगुरु करता है और सतगुरु है ज्ञान। यह है सच्ची बात।

मुझे सतगुरु नहीं मिलता था यद्यपि मैंने गुरुकी बहुत सेवा की, बहुत प्रेम किया। इसलिये यह ज्ञान देने के लियें मुझे यह काम दिया गया था। जब से मुझे यह पता लगा कि मेरा रूप लोगों के अन्तर प्रगट होता है, उनके काम करता है, बच्चे दे जाता है, दवायें बता जाता है, परीक्षा के पर्चे हल करा जाता है लेकिन मैं नहीं होता, तो मुझे सतज्ञान मिल गया। क्या सतज्ञान मिला ? कि यह सारा

खेल मनुष्य के अपने ही मन के विश्वास का है या उसका कर्म है। मन की तरंगों को चूंकि हम सत मानते हैं इसलिये हम मन के चक्र में ही रहते हैं और हमारा आवागवन समाप्त नहीं होता। हमारा सूक्ष्म शरीर जब चौला छोड़ देता है, यदि उसको इस शरीर में ही ज्ञान हो जाय और अन्त समय पर उसका प्रकाश और शब्द आजाय तो उसका सूक्ष्म शरीर हल्का हो जायगा। इसलिये वह ब्रह्मलोक या और लोकों में चला जायगा। यह है थ्यौरी (कल्पना)।

अब राधास्वामी मत वालों ने क्रिया कर्म छोड़ दिया। यदि मरने वाले को ज्ञान नहीं है और उसका क्रिया कर्म भी नहीं किया जाता तो यह गलती है।

संन्यासियों का भी क्रिया कर्म नहीं किया जाता कि उनको ज्ञान प्राप्त है लेकिन यदि वह सच्चे अर्थों में सन्यासी नहीं हैं और भँगोंये कपड़े ही पहिनने वाले हैं तो फिर कोई लाभ नहीं। यदि वह चेलों में या आश्रम में या किसी और वस्तु में ही फँसा हुआ है तो वह वहीं आकर जन्म लेगा जहां उसका सम्बन्ध रहा है। बाबा सावनसिंह जी कहा करते थे कि जिनका हरिद्वार से प्रेम है वह मरने के बाद हरिद्वार में मछलियां बनेंगे। यह ठीक है लेकिन मैं यह पूछता हूं कि जिनका व्यास से या आगरा या होशियारपुर से प्रेम होगा वह कहां जायेंगे। वह भी तो व्यास आगरा में मछलियां ही बनेंगे और होशियारपुर में जन्म लेंगे। यदि मेरा मन्दिर से प्रेम होगा तो मैं वापिस मन्दिर में ही आऊँगा।

इसलिये मुझे अफ्रीका ले जाने से क्या लाभ! पहिले अपनी पाकिट को देखो। (अफ्रीका वाले ने कहा कि महाराज पाकिट आदि सब आपही की है)। अच्छा यदि मैं गया भी तो क्या करूँगा? यह भेद ही तो बताऊँगा।

गुरु ने दिया भेद अगम का, सुरत चली तज देस भरम का।
बल पाया अब विरह भरम का, भटकट छूटा दहर व हरम का॥
बरसन लागा मेघ करम का, संशय भागा जनम मरन का॥

मगर इस भेद को वह ग्रहण करता है जिसको परमार्थ की आवश्यकता होती है। दुनियां क्या परमार्थ के लिये मेरे पास आती है ? कोई पुत्र चाहता है, कोई रोग से छुटकारा चाहता है, कोई धन के लिये आता है। अपनी अपनी सांसारिक आवश्यक्ताओं के लिये आते हैं। यह तो उनके कर्म की बात है। मैं उनको केवल विश्वास दिलाता हूं। जो विश्वास कर लेते हैं उनके काम हो जाते हैं।

वैसे तो राधास्वामी मत वाले भी अपने अपने गुरुओं के हर साल भंगरे करते हैं और सत्संग कराते हैं। क्यों ? चूंकि गुरु ने जीवन भर सत्संग कराया है इसलिये यदि वह अभी तक सत्संग में ही फँसा हुआ हो तो वह आके चला जाय।

काट घटा जब आकर छाई।
धारा मौज अधिक बरसाई॥
जीव अनेक रहे घबराई।
काया गढ़ उन दीन ढहाई॥
जमपुर जाय जीव पछतावें।
जम के दूत तिन बहुत सतावें॥

यम क्या है ? अपने ही बिचार और अपनी ही वासनायें हैं। और कोई यम नहीं है। लोग कहते हैं कि मरते समय बाबा फकीर आया। पालकी लाया आदि लेकिन मैं तो होता नहीं। तभी तो मैं कहता हूं कि इन गुरुओं ने सचाई प्रगट नहीं की। कौन जाता है किसी को लेने ? जिस पर किसी का विश्वास होता है उसका रूप जीव के दिमाग पर अंकित होता है। वही सामने आजाता है। चूंकि गुरुओं ने यह विख्यात कर रक्खा है कि हम जीव के अन्त समय पर जाकर उसको ले जायेंगे, इसलिये वही नक्शा उसके अपने विश्वास के अनुसार उसके सामने आजाता है। वास्तव में न कोई आता है न जाता है।

जब मृत्यु निकट आती है तो मरने वाले के सामने पुराने मरे हुए आदमी आते हैं। क्यों ? अब मैं हूं। मेरे अन्तर मेरे पुरखों का रक्त है। मेरी मां का रक्त है। उनके संस्कार हैं और उनके विचार हैं। ऐसे ही सब के अन्तर हैं। जब आदमी कमजोर हो जाता है तो वही विचार और संस्कार जो पुरुषों के रक्त के द्वारा मनुष्य के दिमाग पर होते हैं। वही रूप बना कर सामने आजाते हैं और कोई नहीं होता। इस भेद को गुरुओं ने पर्दे में रक्खा और करोड़ों रुपया जमा हुआ और डेरे बन गये। मैं चूंकि स्पष्ट कहता हूं इसलिए मुझे कोई नहीं देता। मैं भी पर्दा रखता तो चाहे जितना रुपया जमा कर लेता। लेकिन मेरा यह मिशन नहीं है।

नाना कष्ट देवें पल पल में।
फिर फांसी डारें गल गल में ।।
कभी नर्क माहिं दें गोते ।
जीव सहें दुख अति कर रोते ।।

तुमको स्वप्न में डर क्यों लगता है ? यह अपने ही मन के विचार हैं। मलीन विचार होने के कारण डर लगता है। अच्छे विचारों के कारण अच्छे दृश्य सामने आते हैं। मेरे दिमाग से अब तक रेल और तार नहीं जाते। यह पुराने संस्कार पड़े हुये हैं वह समाप्त नहीं होते। कल स्वप्न में पिंड दादन खाँ गया हुआ था। कभी मैं वहाँ सिगनलर था। केवल नाम ले लेने से ही बेड़ा पार नहीं होता। पहिले सत्संग में बैठ कर बात को समझो फिर उस पर अमल करो और अपने जीवन को क्रियात्मक (अमली) बनाओ। तब नाम से तुमको लाभ होगा।

वह निर्दयी दया नहिं लावें।
अती त्रास से जीव मुरझावे ।।
अग्नि खंभ से फिर लिपटावें।
हाय हाय कर तब चिल्लावें ।।

सुने न कोई मुशकिल भारी ।
सिर में माला ले गल डारी ।।

यद्यपि यह रोचक और भयानक बात है मगर यह ठीक है ।

मार मार चहुंदिस से होई ।
पतिगत अपनी सब बिधि खोई ।।

हमारा जो अपना आपा है वह उस मालिक का अंश है । चूंकि हमको ज्ञान नहीं है इसलिये हम दुख सुख उठाते हैं ।

नर्कन में अति त्रास दिखावें ।
फिर चौरासी ले पहुंचावें ।।
गुरु भक्ति विन यह गति होई ।
नर देही सब बाद गँवाई ।।

गुरु भक्ति क्या है ? तुम लोग यह समझते हो कि बाबा फकीर का मन्दिर बना दिया या गुरु को दस बीस हजार रुपया दे दिया, यह गुरु भक्ति है । नहीं, यह गुरु भक्ति नहीं है । यह तो संसार का व्यवहार है और यह होना भी चाहिये । फिर गुरु भक्ति क्या है ?

दर्शन करे बचन पुनि सुने ।
सुन सुन कर फिर मन में गुने ।।
गुन गुन काढ़ि लेय तिरु सारा ।
काढ़ि सार तब करे अहारा ।।
कर अहार पुष्ट हुआ भाई ।
जग औ भटक सब गये गँवाई ।।

गुरु को रुपया कपड़े देना दुनिया की सभ्यता है । दान देने से भला भी होता है । धन देने से यदि तुम यह चाहो कि तुम सूक्ष्म-शरीर के चक्र से निकल जाओ तो यह गलत है । यदि तुम गुरु की बात को समझ जाओ और उस पर अमल करो तब तो तुम निकल सकते हो अथवा नहीं । हां यह हो सकता है कि इस दान से तुमको जन्म अच्छा मिले । मास्टर मोहनलाल के पिताजी अपने जीवन में

छत्रीले लगाया करते थे और निर्धनों को अन्न दिया करते थे। जब उनका अन्त समय आया तो मास्टर मोहनलाल उनके पास थे। उन्होंने कहा कि मोहनलाल ! पानी ही पानी और अन्न ही अन्न दिखाई आ रहा है। वह क्यों दिखाई दिया ? क्योंकि उन्होंने जीवन भर अन्न बांटा और पीने के पानी का प्रबन्ध किया। मैं इस सेवा का खंडन नहीं करता। यदि तुम जीवन में परोपकार नहीं करोगे तब तुम बिल्कुल ही गये।

जो जो भजन भक्ति से चूके।
तिनके तन जम पल पल थूके ॥

सुमिरन ध्यान और है और भजन और है। शब्द को सुनने का नाम भजन है। जो केवल सुमिरन ध्यान ही करता रहेगा उसको भी मन के चक्र से छुटकारा नहीं है। इससे मन को आनन्द मिलेगा और अच्छी योनि मिलेगी मगर जन्म मरण नहीं छूटेगा। जब तक सुरत मन को छोड़ कर शब्द में लय नहीं होगी, आवागवन नहीं जायगा।

ऐसी कुगति होयगी सब की।
जो नहिं धारें सतगुरु अब की ॥

जो इस जीवन में सतगुरु को प्राप्त नहीं करेगा उसकी ऐसी ही गति होगी। मैं तो इसीलिये उठा हूं कि सचाई वर्णन कर जाऊँ ताकि लोग आवागवन के चक्र से बच जांय लेकिन आज कल के लोग इस गुरुइज्म से नहीं बचे।

सतगुरु बिन कोई नहिं बाचे।
नाम बिना चौरासी नाचे।

सतगुरु तुमने कर लिया लेकिन जब तक नाम नहीं है तुम चौरासी से बच नहीं सकते। सतगुरु मुख्य है। इससे तुमको दुनियाँ का लाभ तो होगा लेकिन जब तक नाम को नहीं पकड़ोगे, आवागवन से छुटकारा नहीं हो सकता।

धन्य भाग हम सतगुरु पाया।
चढ़ी सुरत मन गगन समाया॥
सुन्न मण्डल जाय झूला झूली।
सावन मास लिया फल मूली॥
सखियाँ सब मिल गावन लागीं।
माया ममता देखत भागीं।

माया ममता कैसे भागी ? गुरु न बाबा फकीर है न दाता दयाल किन्तु गुरु है ज्ञान। इनकी वाणी है ज्ञान। इसको समझो तब लाभ होगा।

सभी सुहागिन झूलें घर घर।
पिया अपने को हिरदे धर धर॥

पिया है शब्द। इसको हिरदै में रख कर आदमी मस्त होकर फिरता है।

पिया बिमुख तरसें बहु नारी।
जिनके पति परदेस सिधारी॥

यह कवियों का अलंकार हैं। सुरत का दिया शब्द है। मन का दिया प्रकाश है। जब तक शब्द और प्रकाश नहीं पकड़ोगे, आवा-गवन समाप्त नहीं होगा।

तिनको सावन काला नाग।
डस डस खावे लागे आग॥
बाहर वर्षा रिम-झिम होई।
घट में उनके अगिन समोई॥

उनके अन्तर में तड़प रहती है और शान्ति नहीं मिलती।

अगिनी लागी मानो तन मन फूंका।
उनके भावें पड़ गया सूखा॥

अब पुरुषोत्तमदास घरवालों की बात को याद करके रोता है। मेरे साथ क्या हो, यह अपने बस की बात नहीं। उसने सुमिरन भी

किया और ध्यान भी बहुत किया मगर उसका मोह नहीं गया। दुनियां के झगड़ों से ओर रिश्तेदारों से उसका मन उदास नहीं हुआ।

तीज त्यौहार कछु नहिं भावे ।
मन में दुख, नहिं हर्ष समावे ॥

जब तक अज्ञान है तब तक हम चक्कर खाते हैं अन्यथा कौन भाई कौन बाप मगर हमको इसकी समझ जल्दी नहीं आती।

आपको सत्संग करा दिया। अपना जन्म बनाओ। यदि मेरा स्वास्थ्य अच्छा रहा तो मैं आजाऊँगा मगर अपनी जेब को देखो। यदि मैं यह कहूं कि मेरे जाने से तुम तर जाओगे तो यह बिल्कुल गलत है। मैं अपनी आत्मा को निर्मल रखना चाहता हूं। जिसकी इच्छा हो मुझे बुलाये, न इच्छा हो न बुलाये। यदि मैं आपको सच्ची बात नहीं बताता और मुँह बना के बैठ जाता हूं कि सन्तजी महाराज होशियारपुर से तुम लोगों को तारने के लिये यहां पधारे हैं तो मैं इस अपराध के दण्ड से बच नहीं सकता। मेरी बात को सुनकर जब तक उस पर अमल नहीं करोगे, बेड़ा पार नहीं होगा।

यह जो कुछ मैंने आपको कहा है यह उनके वहाँ अफ्रीका में जाकर बता देना। इसके बाद वह फिर भी चाहें तो मुझको लिख देना मैं आजाऊँगा।

जीव जले विरह में, क्यों कर शीतल होय।
बिन वर्षा पिया बचन के, गई तरावट खोय ॥

जब तक तुम गुरु की बात को समझोगे नहीं और समझ कर अपने दिमाग में न रक्खोगे, तुमको शान्ति न मिलेगी। लाख मेरी सेवा करते रहो और मुझे बुलाते रहो मेरी बात को समझो। यदि साधन भी कम है किन्तु मेरी बात तुम्हारी समझ में बैठ गई है और यदि वह तुम्हारे अन्त समय पर तुमको याद आजायेगी तो

तुम बच जाओगे लेकिन यदि अन्त समय पर बाबा फकीर आजायगा तो तुम बच नहीं सकोगे ।

जिनको कन्त मिलाप है, तिन मुख बरसत नूर ।
घट शीतल हिरदे सुखी, बाजे अनहद तूर ॥

जिनको कन्त मिलाप है अर्थात जिनको अन्तर में शब्द से मिलाप है उनके मुख पर तेज रहता है ।

ऐ त्रिलोचनसिंह मुझे पता नहीं कि तू कहां है । तेरी स्त्री तेरे बच्चे आये हुए हैं । वह वास्तव में न वह तेरी स्त्री है और न तू उसका पति । न वह अब तेरे बच्चे हैं, न तू उनका बाप है तुमको ख्याल देता हूं कि इस संसार में कोई भी अपना नहीं है । अपने ख्याल और अपनी समझ से अपना जन्म बना ।

——:०:——

प्रार्थना

दया करो प्रभु चूक किये की ॥

मैं अजान कुछ मर्म न जानूं, तुम जानो स्वामी जन के हिये की ।
कामी क्रोधी कपटी लम्पट. धृग जीवन धृग मेरे हिये की ॥क्षमा०
मैं सेवक तुम स्वामी मेरे, लाज रक्खो ऐसे नाम लिये की ।
प्रेम पियाला मुझे पिला दो, इच्छा अमृत नाम पिये की ॥ क्षमा०
करो उद्धार सँभाल करो अब, जग माया में चित के दिये की ॥क्षमा०

——०——

नुक्ता

[ले०—महर्शि शिव]

(२५-¨-१९१६) प्रातःकाल का समय था । ला० मनोहरलाल पेंशनर जो बहुत बूढ़े थे और हमारे साथ रहते थे, कहने लगे—"आज कल साधुओं की दशा बिगड़ गई है । ' हमने कहा— 'इनकी दशा

सुधरी कब थी ! यह दुनियाँ तो कुत्ते की दुम है। हमेशा टेड़ी की टेड़ी। इसको सीधी किसने किया है। यह तो जैसी है वैसी ही रहेगी यदि पहिले अच्छी रहती होती तो पिछले समय के लोग शिकायत न करते आते। संसार जैसा पहिले था वैसा ही अब है। हां तुम अपने आपको ठीक करना, सुधारना और बनाना चाहते हो तो बनालो। अवसर मिला हुआ है। यदि किसी की ओर कुदृष्टि से देखते हो तो समझलो कि अभी तक मन मलीन है। अध्यात्म की पहिली सीढ़ी यह है कि मनुष्य की दृष्टि सुदृष्टा, कला दृष्टा और सत दृष्टा होने लगे। उसको दुनियां में बुराई न दिखाई दे न बुराई का मन में विचार आये। इस बात को मनुष्य यदि चाहे तो कर सकता है। यह सम्भव भी है। यदि वह स्वयं अच्छा हो जायगा तो दुनियां अच्छी दिखाई देने लगेगी। "आप भला तो जग भला।" और पंथाइयों के यहां साधु, गृहस्थ या दूसरों की ओर से दृष्टि को फेर कर केवल अपनी ओर देखने और अपनी दशा के बनाने का आदेश दिया जाता है। आखिर कोई क्या चाहता है ? बुरा बनना चाहता है या भला बनना ही बनना है। यदि किसी की बुराई पर दृष्टि डालते हो तो बुराई का अनजाने रूप से अभ्यास होता रहेगा और इसी में तुम परिपूर्ण हो जाओगे। दुर्योधन इस तरह का व्यक्ति था। यदि लोगों की भलाई पर दृष्टि डालते हो तो भलाई का अनजाने ढंग से अभ्यास होता रहेगा और परिपूर्णता प्राप्त कर लोगे। युधिष्ठिर इस तरह के पुरुष थे। एक बार भगवान कृष्ण ने दुर्योधन से कहा कि अच्छा आदमी खोज करके लाओ। वह कई दिन बाद लौट कर कहने लगा—"अच्छा आदमी दुनियाँ में कोई भी नहीं है।" फिर युधिष्ठिर से कहा—"बुरा आदमी खोज लाओ।" यह कई दिन बाद लौटे। कहने लगे—"बुरा आदमी दुनियाँ में कोई भी नहीं है।" फिर अर्जुन से पूछा—"इन दोनों ने क्यों ऐसा उत्तर दिया ?" अर्जुन बोले—"यह अपनी अपनी दृष्टि के कारण हैं। जिसने जैसी

दृष्टि बनाली उसको वैसा ही भासता, मुरता और दिखाई आता है।" कृष्ण भगवान ने अर्जुन से पूछा—"तुम क्या करते हो ?" वह बोले—"मुझको बुरे भले दोनों दीखते हैं।" कृष्ण हँसे—"सच है तुम नर हो, इसलिये तुम्हारी दृष्टि बुराई भलाई दोनों पर पड़ती है। "अर्जुन नर कहलाते थे और श्री कृष्ण नरायण थे।" अभिप्राय यह कि यह संसार स्वयं न तो बुरा है न भला है। जैसी तुम अपनी दृष्टि बनालो वह वैसा ही दिखाई आने लगता है। किसी के लिये संसार मुक्त है। दूसरे के लिये बन्धन है। एक के लिये भोग, दूसरे के लिये रोग है। एक के लिये योग, दूसरे के लिये बियोग है। पहिले तुम सोचलो कि क्या बनना चाहते हो। वैसा ही आचरण करने लग जाओ। वैसे ही होने लगोगे। नेकी नेक राह, बदी बन्द राह। यह तो हम जानते हैं। यदि कोई इसके विपरीत सोचता समझता है तो वह जाने उसका काम जाने।

सन्त

ले०—दुर्गादास 'चमन' टीहरी, ज्वालामुखी

सन्त रहन सब से जुदा, मन में करो ख्याल ॥
मन में करो ख्याल, सन्त दुनियां से न्यारे।
बचन कहें अनमोल, लगें जो सब को प्यारे ॥
दुख सुख से रहें दूर, करें नित शब्द अहारा।
सत संगत से प्रेम, कहत यह काम हमारा ॥
बन्धन से रहें दूर, बन्ध है माया भारी।
सहज अवस्था रूप, सन्त की महिमा भारी ॥
निन्दक से अति प्यार, प्यार की अजब कहानी।
शान्त भाव निज रूप, सदा रहें घट के ज्ञानी ॥

सादा जीवन रहें, बचन अमृत सम बोलें।
सब का करें उद्धार, आप निज रूप में डोलें ।।

ब्रह्मा विष्णु महेश, सभी है काल की माया ।
मन के हैं सब भाव, काल ने जाल बिछाया ।।

उनकी रहनी शान्त, रहें वह परम दयाल ।
सन्त रहन सबसे जुदा, मन में करो ख्याल ।।

विचार का जगत

(ले०—महर्षि 'शिव')

गंगोत्री से किस तरह जल उबल उबल कर बाहर की ओर निकलता रहता है । प्रारम्भ में यद्यपि इसकी हैसियत नहीं रहती है मगर वह जल आगे बढ़कर महानदी कहलाता है और गंगा के नाम से पुकारा जाता है । बनारस, इलाहाबाद, कानपुर, कलकत्ता जैसे बड़े शहर इसके किनारे बसे हुये हैं और वही जल बंगाल में किस तरह हाथापाई करके समुद्र में प्रवेश कर जाता है । कभी तुमने इस पर सोचा विचारा है ।

नन्ही नन्ही बूदें एक एक करके आकाश से गिरती हैं । आरम्भ में इन की कोई हैसियत नहीं रहती मगर लगातार पृथ्वी की ओर आने से वह बाढ़ के रूप में मस्त हाथी की तरह झूमते हुये पहाड़ों से नीचे उतरती है और किसी को इनके सामना करने की शक्ति नहीं रहती । क्या कभी तुमने इस पर भी सोचा है ।

भाप की क्या हैसियत है ? देगची चूल्हे पर चढ़ी हुई है । गर्मी पाकर पानी की भाप ऊपर की और उठती है । उस समय इसकी कोई हैसियत नहीं है । मगर यही भाप इकठ्ठा होकर रेलगाड़ी चलाती है । जहाज को समुद्र की छाती पर दौड़ाती है । इसी की सहायता से तेल निकलता है, आटा पीसा जाता है । धान चावल बनते हैं । लकड़ी काटी जाती है ।

सैकड़ों काम होते हैं। क्या तुमको यह भाप आश्चर्यजनक वस्तु नहीं मालुम देती। किसान की खेती कैसी हरी भरी दिखाई देती है। यह खेत कुछ नहीं हैं। केवल नन्हीं नन्हीं घास है, जिस पर यदि तुम्हारा पांव पड़ जाये तो कुचल जायगी मगर एक साथ होने से वही घास क्या बहार दे रही है। इसी से हमारे तुम्हारे लिये भोजन सामिग्री का प्रबन्ध होता है।

बरगद का दाना कितना बारीक और छोटा होता है मगर उसको जमीन में गिरने दो। वह तरी पाकर धीरे धीरे अपना सिर ऊपर की ओर उठाता है और आलीशान वृक्ष बनकर वनस्पति जगत का राजा कहलाता है।

यह सब बिचित्र है किन्तु सबसे विचित्र तुम्हारा अपना विचार है। इसका कभी अन्त नहीं है। इसके फौवारे मन के स्रोत से उमड़ उमड़ कर निकलते रहते हैं। अन्त में महानदी बनकर समुद्र की तरह लहराने लगते हैं और सारे संसार को ढक लेते हैं। क्या तुमने अपने मन के संकल्प विकल्प पर विचार किया है? यह सबसे अधिक आश्चर्यजनक है। जैसे गंगोत्री के जल से गंगा की धारें बहती रहती हैं जैसे नन्ही-नन्हीं बूंदों से बाढ़ आती है, वैसे ही ऐ मनुष्य! तेरे विचार करने से ही यह दुनियां बनती और बिगड़ती रहती है। क्या अच्छा होता कि तू अपनी हैसियत को जान लेता, तू अपने विचार की शक्ति को जान लेता। तुझको ज्ञान हो जाता कि यह विचार क्या वस्तु है तो तू कभी अनादर के गड्ढे में न पड़ा रहता। विश्वामित्र ने अपने संकल्प से अलग ब्रह्माण्ड रच लिया था। हम सब अपनी अपनी दुनियाँ प्रतिदिन बनाया करते हैं किन्तु असलियत से अनजान रहने के कारण दुखी रहते हैं। थोड़ा अपने स्वरूप का ध्यान कर लिया करो। तुम देखोगे कि यह प्रकृति तुम्हारी सेविका बनकर तुम्हारी पूजा का दम भरने लगेगी। तुम क्यों नहीं अपने निज स्वरूप का ज्ञान प्राप्त करते। केवल अपने स्वरूप के पहिचानने की देर है। फिर कोई तुम्हारे मुकाबले में खड़े होने की जुर्रत न कर सकेगा। तुम अपना मूल्य नहीं जानते हो। तुमको अपने स्वरूप का ज्ञान नहीं है इसलिये तुम दुखी हो। उठो! अपनी असलियत को समझो। कब तक सोते पड़े रहोगे।

प्रवचन (मासिक सत्संग)

परम दयाल फकीर चन्द जी महाराज

मानवता मन्दिर होशियारपुर २२-९-१९७४

बन्दनम् सतज्ञान दाता, बन्दनम् सतज्ञान मय ।
बन्दनम् निर्वाणदाता, बन्दनम् निर्वाण मय ॥
भक्ति मुक्ति योग युक्ति, आपके आधीन सब ।
आप ही हैं सिंधु सद्गति, जीव जन्तु मीन सब ॥
आप गुरु सतगुरु दया और प्रेम के भंडार हैं ।
आप कर्त्ता धर्त्ता हैं, करतार जगदाधार हैं ॥
ऋद्धि सिद्धि शक्ति नौ निद्ध, हैं चरण में आपके ।
बच गया भव दुख से जो आया शरण में आपके ॥
भक्ति दीजे नाम की सत नाम में विश्राम दे ।
राधास्वामी अपना कीजे, राधास्वामी धाम दे ॥

यह शब्द सुना । मेरे अन्तर एक सवाल पैदा होता है कि फकीर ! तुमने अपने आप को सन्त सतगुरु वक्त कहा है । तुम दुनियां को क्या ज्ञान देना चाहते हो । सच्ची बात तो यह है कि जो ज्ञान मुझे प्राप्त हुआ वह तो यह कहता है कि फकीर बिल्कुल चुप हो जाओ और बोलो नहीं मगर मुझसे चुप रहा नहीं जाता । 'क्यों ? मालिक की मौज या दाता दयालजी महाराज का संस्कार या मेरा दिमाग । कल शाम को भी रेडियो पर सुना और आज सुवह भी सुना कि अमरीका में २५० मील प्रति घंटा के वेग से तूफान आया, वर्षा आई और पहाड़ गिर गया जिसके नीचे तीन चार गांव दब गये । आठ दस हजार आदमी मर गये और हजारों घायल होगये । कुदरत ने मेरा दिमाग ही ऐसा बनाया है कि मैं सोचने के लिये विवश हूं तुम भी सोचो कि जगह जगह तूफान आते हैं, बाढ़ भूचाल और

बीमारियां आती हैं। यह क्यों आती हैं ? हम कहते हैं कि यह हमारे कर्म हैं। लोगों को ज्ञान देने से पहिले अपने आपको सन्तुष्टि देने के लिये अपने आप से ही सवाल करता हूं कि क्या कर्म की फिलोस्फी ठीक है ? आज कल साइंस का युग है। हर एक काम यहां किसी सिद्धान्त या नियम के आधीन होता है लोग कहते हैं कि ईश्वर वर्षा करता है। ठीक है बंगाल की खाड़ी या हमारे समुद्रों से जो मानसून आती है वह हिमालय पर्वत से टकरा कर भारत में वर्षा करती है, यदि आप ईश्वर से यह कहो कि इसी मानसून से हिमालय की दूसरी ओर वर्षा करदे तो सम्भव नहीं क्योंकि मानसून भारी होने के कारण इतनी ऊँची नहीं जा सकती जितनी ऊँचाई हिमालय पर्वत की है। वह हिमालय को पार नहीं कर सकती। इसलिये यह मानसून हिमालय के दूसरी ओर वर्षा नहीं कर सकती ऐसे ही कुदरत के कानून के अनुसार सूर्य शाम को छिपता है। यदि आप ईश्वर को कहो कि दोपहर को सूर्य को छिपा दे या रात को बारह बजे सूर्य निकल आये तो यह असम्भव है। इसलिये कोई नियम है जिसके आधीन यहां सब कुछ हो रहा है।

न्यूटन की थ्यौरी सिद्ध करती है कि यदि तुम अपना हाथ हिलाओ तो तुम्हारे हाथ की गति ऊपर के लोकों तक जाती है। वहां से बल लेकर फिर वहाँ ही लौट आती है जहाँ से कि वह चली थी और फिर वह अपना प्रभाव करती है। इससे सिद्ध हुआ कि यहां जो कुछ भी हो रहा है यह सब हमारे अपने ही कर्म विचार और गति का परिणाम है। एक शरीर की गति है, एक मन की गति है और एक आत्मा की गति है। गति चाहे स्थूल पदार्थ की है चाहे सूक्ष्म पदार्थ की है चाहे कारण पदार्थ या तत्व की है उसकी गति ऊपर जाकर वहां से शक्ति लेकर फिर वहां ही आजाती है जहां से कि वह चली थी। गति केवल मनुष्य तक ही सीमित नहीं है। हर प्रकार की वस्तुयें गति होती है। प्रकृति की हर प्रकार की वस्तु की गति

ऊपर तक जाती है और फिर वापिस आकर प्रभाव करती है। सन्तों के मार्ग में इसी का नाम काल और माया है। मैंने जो सत-ज्ञान समझा है वह अपने कर्म भोग वश कहता हूं।

एक सतज्ञान तो मुझे यह कहता है कि फकीर! चुप होजा मगर कर्म का चक्र है. चुप हुआ नहीं जाता। इस समय तुम देखो कि इतने बड़े और अमरीका के प्रेसीडेन्ट निक्सन ने वाटर गेट स्काण्डल में क्या किया। देश का जैसा राजा होता है वैसा ही प्रभाव उसकी प्रजा पर गुजरता है। ऐसे ही घर के बुजुर्ग का प्रभाव सन्तान पर पड़ता है। यदि एक आदमी को आतशिक या सुजाक जैसी कोई बीमारी हो जाती है तो उसका प्रभाव उसकी सन्तान में भी अवश्य होता है। यदि बेटे में नहीं भी प्रगट होता तो पोते में अवश्य प्रगट होगा। यह तो शारीरिक रोगों की दशा है। ऐसे ही मां बाप के जैसे विचार होंगे वह उसकी सन्तान पर अवश्य प्रभाव करेंगे। इतिहास को पढ़ो। कौरव और पाण्डवों में ठंडी लड़ाई थी। द्रोपदी ने जो कठोर बचन दुर्योधन को कहे कि अन्धों की संतान अन्धी ही होती है इसका परिणाम यह हुआ कि भारत के १८ अक्षोहिणी वीर मारे गये। कितने ही परिवार विगड़ गये। कितनी स्त्रियां विधवा होगई और कितने बच्चे मारे गये। आदमी जितना बड़ा होता है उतना ही उसके विचार का प्रभाव प्रबल होता है। अकेले रावण ने अप-राध किया और उसका फल राक्षसों को भोगना पड़ा।

तो मैं क्या सतज्ञान देना चाहता हूं कि यथा राजा तथा प्रजा। जैसे मां बाप वैसी सन्तान। पाकिस्तान वालों के मन में भारत वासियों से शत्रुता रही। काश्मीर पर आक्रमण एक बार किया, दूसरा किया और फिर तीसरा किया। अब उनके विचारों का परि-णाम देखो। स्वयं पाकिस्तान में क्या हो रहा है। राजा का विचार अधिक प्रभाव करता है और प्रजा का विचार कम प्रभाव करता है। इस समय भारत में सब पार्टियों को एक दूसरे से घृणा है। और इस

घृणा और द्वेष के विचार देश में फैल रहे हैं। इसलिये न्यूटन की थ्यौरी के अनुसार देश का भला नहीं होगा। यह है सतज्ञान जो मैं संसार को देना चाहता हूं।

बंगला देश में क्या कुछ नहीं हुआ। कितनी बाढ़ें आती हैं और कितने रोग और आपत्तियां आरही हैं। यू० एन० ओ० कितना प्रयत्न कर रहा है किन्तु क्या कहीं शान्ति है। अपने घरों में देखो। सब एक दूसरे के विरोधी हैं। घरों में झगड़े हैं। तुम्हारे विचारों का प्रभाव तुम्हारी सन्तान पर और फिर उनकी सन्तान पर अवश्य पड़ता है। यह कानून है।

इसके वारे में एक कहानी याद आती है कि एक राजा एक घोड़ी पर चढ़ कर लड़ाई के मैदान में जारहा था। आगे एक नहर पार करनी थी। घोड़ी पानी में जबरदस्ती बैठ गई। राजा छलाँग मार कर बाहर निकल गया। जांच करने पर ज्ञात हुआ कि इस घोड़ी की नानी में यह आदत थी कि वह पानी में बैठ जाया करती थी और वह आदत उस घोड़ी को उत्तराधिकार में आई। मैं चूंकि सन्त सत्गुरु हूँ इसलिये कहे जाता हूं कि जिस प्रकार के विचार हमारे होंगे वह हमारी सन्तान में अवश्य आयेंगे।

मैं साइकोलोजी (मनो विज्ञान) का मास्टर हूं यद्यपि १०० प्रतिशत नहीं लेकिन इस रहस्य को जानता हूं। इस समय हमारा घरेलू या राष्ट्रीय जीवन क्यों बिगड़ा हुआ है। किसी को रहस्य का पता नहीं। देखो ! यदि तुम आम की गुटली को सोंफ या अजवाइन के पानी में २४ घन्टे भिगोकर बोओगे तो जब उस पौदे में फल लगेंगे तो उसमें सोंफ या अजवाइन की सुगन्ध आयेगी। ऐसे ही इस समय तुम लोग जितनी सन्तान पैदा कर रहे हो, वह कोई तो शराब पीकर स्त्री के पास जाता है, कोई अफीम खाकर जाता है, कोई और कुछ खाता है। तुम कैसे आशा कर सकते हो कि ऐसी अवस्था में जन्म लेने वाली सन्तान अनियंत्रित (बे जब्त) नहीं होगी

और कोई शुभ काम करेगी। इसलिये आज तुम देख रहे हो कि आज कल का युवक वर्ग किधर जा रहा है। तुम लाख सत्संग करो, लाख पाठ करो, लाख यू०एन०ओ० कान्फ्रेंस करो बीज का प्रभाव नष्ट नहीं होता। इसलिये सन्तान को सन्तान के ख्याल से पैदा करो। अपने स्वाद के लिये पैदा न करो। तुम लोग अपने स्वार्थ के लिये धोखा फरेब करते हो, हर जगह मिलावट करते हो, ठगी करते हो। तुम लाख बाबा फकीर के चेले बन जाओ या और किसी गुरु के चेले बन आओ तुम्हारा जीवन नहीं बदल सकता। मैंने अपने आप को सन्त सतगुरु वक्त कहा है। लोग मुझ पर उँगली उठाते हैं और मेरा विरोध भी करते हैं, मुझे गाली भी देते हैं मगर मुझे गुरु की आज्ञा है इसलिये यह मेरा कर्म भोग है मैं फूँक मार कर जगत कल्याण नहीं कर सकता।

देखो आज भी भूमि तो वही है जो पहिले थी किन्तु पहिले भूमि में अन्न बहुत कम पैदा होता था और आज कल विज्ञान से नये नये प्रकार के बीज बन गये। कई तरह की खाद तैयार होगई। इनकी सहायता से अब पहिले से कई गुना अन्न पैदा होता है। पशुओं में काफी सुधार आगया। अच्छी अच्छी नस्ल की गायें और भैंसे तैयार होगई मगर मानव नस्ल के सुधार की ओर किसी ने कोई ध्यान नहीं दिया।

सम्भव है कि लोग कहें कि मैं छूत छात के पक्ष में हूं। सुनो ! जिस तरह हमारे शरीर के विभिन्न अंग एक दूसरे के साथ जुड़े हुये अपना काम अलग अलग करते हैं, इसी तरह हर एक अलग अलग विचार धारा वाले मनुष्य आपस में छूत छात या घृणा द्वेष के बिना मिल जुल कर अपना काम कर सकते हैं और करें तो संसार का कल्यांण हो सकता है। जहाँ एकता का सवाल है, वह आत्मिक दृष्टि से है। जहां जाति, वर्ण और कुल का सवाल नहीं है वह भी

आत्मिक दृष्टि से, चूंकि आत्मपने में आति वर्ण और कुल आदि का कोई विचार नहीं है इसमें भी संस्कार काम करते हैं जैसे हमारे शरीर में हाथ और काम करते हैं, पांव और काम करते हैं और आँख कान नाक और काम करते हैं। जैसे इनमें जो हमारा आत्मा है वह एक है और वह इन सब पर अधिकार रखता है, वैसे ही एकता में अनेकता और अनेकता में एकता है।

हर एक जगह यह आशा थी कि सन्त मार्ग वाले या धार्मिक जगत वाले संसार में नेकी फैलायेंगे लेकिन यह कैसे नेकी फैला सकते हैं। मैंने चेला बन के देखा और गुरू बनके देखा। मेरा रूप लोगों के अन्तर प्रगट होता है। किसी को दवा बता जाता है किसी को बच्चा दे जाता है, किसी को अन्त समय पर आकर ले जाता है लेकिन मैं कहीं नहीं जाता और न मुझे इन घटनाओं का कोई पता होता है। यह सब लोगों का अपना विश्वास है। यह महात्मा लोग चाहे किसी भी डेरे या गद्दी, धर्म या आश्रम के हैं इनके रूप भी लोगों के विश्वास के अनुसार उनके अन्तर प्रगट होते हैं मगर कोई किसी के अन्तर नहीं जाता, यह गुरु और महात्मा लोग अपना झूठा प्रोपेगंडा करते हैं। जीव उनके जाल में फँस जाते हैं और अपना रुपया इनको भेंट करके लुट जाते हैं। जब गुरुओं की यह दशा है तो आप यह कैसे आशा कर सकते हैं कि उनके चेलों के जीवन सुधर जायेंगे।

मैं आपको सतज्ञान देना चाहता हूं। वह सतज्ञान क्या है ? सुनो ! तुम लाख ईश्वर की भक्ति करो और लाख देवी देवता को मनाओ किन्तु जो जो कर्म तुमने किये हुये हैं और जो जो विचार तुम्हारे में आये हैं या आरहे हैं या तुमको तुम्हारे मां बाप से मिले हैं तम उनके फल से बच नहीं सकते। यही राधास्वामी दयाल ने कहा है—

करम जो जो करेगा तू, अन्त में भोगना पड़ता।

आप लोग मेरे सत्संग में आते हैं। आप मेरी बातों पर अमल करो या न करो, मैं इसका जिम्मेदार नहीं हूं। मेरा काम सतज्ञान देना है। और अमल करना आपका काम है। मैं अपनी ड्यूटी पूरी कर जाना चाहता हूं। तुम अपनी ड्यूटी करो। यदि मेरी बातों पर अमल करोगे तो लाभ उठाओगे। यदि नहीं करोगे तो तुम्हारी इच्छा। ऋषियों ने एक नियम बना दिया कि मन, बचन और कर्म से शुद्ध रहो। सृष्टि का सारा कार व्यवहार किसी नियम के आधीन हो रहा है। यह कानून वही है जो मैंने न्यूटन की थ्योरी बताई है। जैसा तुम्हारा विचार होगा उसके अनुसार तुमको फल मिलेगा।

इन मिलावट करने वालों और स्मगलरों की क्या दशा है? यह आज कानून के पंजे में आरहे हैं। मैं तो यह कहूंगा कि आजकल के गुरु और पंथ वाले मिलावट करने में सब से प्रथम हैं। मैं आपसे यह बात कहता हूं जो मेरे तजुर्बे में आई है। मैं दूसरों का उदाहरण नहीं देता। कल एक स्त्री ने मुझे बताया कि मैं अपने कमरे के आगे सोई हुई थी। रात को ऊपर से एक ईंट गिरी और मेरे कूल्हे पर लगी जिससे मुझे बहुत चोट आई। मैंने आपको याद किया। आप आगये। आपने दो इन्जैक्शन लगा दिये और पलस्तर कर दिया। सुबह जब मैं उठी तो मुझे बहुत आराम था। अब मैं तो उसको इन्जैक्शन लगाने या पलस्तर करने गया नहीं, न मुझे पता था कि उसके ऊपर ईंट गिरी है। ऐसे ही लोगों के विश्वास के अनुसार इन गुरुओं का रूप लोगों के अन्दर प्रगट होता है लेकिन किसी के अन्दर कोई जाता तो है नहीं मगर सच्ची बात कोई नहीं बताता कि मैं तो गया नहीं। उल्टा जीवों को अज्ञान में रख कर उनसे धन लूटा जाता है और यश भी लिया जाता है। इसी अज्ञान के कारण जगह जगह डेरों, मन्दिरों, मसजिदों और गुरुद्वारों पर अरबों रुपया खर्च होगया। अब सन्त कृपालसिंह चोला छोड़ गये। मरने से दस दिन पहिले उन्होंने कहा था कि अभी मैं दस वर्ष और जीऊँगा लेकिन

दस दिन बाद ही मृत्यु होगई। मैं सोचता हूं कि क्या इन सन्तों को यह ख्याल नहीं है कि इन्होंने भी एक दिन जाना है ?

इस जगह गुरुओं के चेले जगह जगह इनका प्रोपेगंडा करते हैं लेकिन देश में कहीं शान्ति नहीं है। हो भी कैसे ? ऐसे आचरण से तुम कैसे आशा कर सकते हो कि तुमको जीवन में शान्ति आयेगी या देश में शान्ति आयेगी। शास्त्र कहते हैं कि 'नर शरीर सुर को भी दुर्लभ'। सोचो और अपना जीवन बनाओ। यदि आज हेरा फेरी या मिलावट करके लखपती भी बन गये तो भी एक दिन मरना है। यदि ईमानदारी से गरीब रह कर जीवन बिताया तो भी एक दिन मरना है। क्यों चार दिन के जीवन के लिये अपने बुरे कर्म बढ़ा रहे हो। अपने घर वालों से या रिश्तेदारों से या दूसरों से घृणा द्वेष रख कर तुम कर्म के फल से तो बच नहीं सकते। दूसरे अपनी भी और दूसरों को भी हानि करोगे। हमारे विचार को यहां से ऊपर जाने और फिर लौटने में कुछ समय लगता है। इसलिये यदि तुम अच्छे या बुरे विचारों के ऊपर से लौटने से पहिले ही तुम मर गये तो जहाँ तुमको दोबारा जन्म मिलेगा, यह विचार वहां जाकर तुम पर प्रभावित होंगे। यही कारण है कि हम इस जन्म में यदि पाप नहीं भी करते तो भी हम पर आपत्ति आजाती है, वह पिछले जन्म के कर्मों का फल है।

इसलिये मैं निर्भय होकर कहे जाता हूं कि यदि यह कर्म फिलोस्फी ठीक हैं तो जिन महात्माओं और महा पुरुषों ने पर्दा रख कर अपने मान और आदर के लिये धन इकट्ठा किया और जायदाद बनाई और अपनी संतान को सोंप गये, वह अपने इस कर्म से बच नहीं सकते। वह जहां भी जायेंगे, कर्म उनके साथ जायगा। यह तो कहते हैं कि जीवों को कि हम तुमको सत लोक पहुंचा देंगे लेकिन कर्म की फिलौस्फी के अनुसार इनमें से कोई भी सतलोक

नहीं गया। जो लोग यह कहते हैं कि हमारे प्रसाद से यह होगया वह होगया, वह अपना प्रोपेगंडा करबाते हैं। यह सब धोका है।

संसार में सुखी रहने का सबसे अच्छा योग यह है कि अपनी नीयत को शुद्ध रक्खो। अपने स्वार्थ के लिये किसी से छल कपट न करो। किसी गरीब को मत सताओ। उसकी कमजोरी का अनुचित लाभ न उठाओ अथवा इस कर्म का फल तुमको भोगना पड़ेगा। यह है सत ज्ञान जो मैं तुम लोगों को देना चाहता हूं।

हम जो कुछ भी इस दुनियां में सोचते हैं, वह हमारे विचार इस ब्रह्माण्ड में स्थित हैं क्योंकि पदार्थ कभी नाश नहीं होता। यह साइंस का सिद्धान्त है। हम चले जायेंगे लेकिन हमारे विचार यहां रहेंगे। इसका प्रमाण देता हूं। जरमनी के सेन्ट हाल में आज से ५०० वर्ष पहिले के भाषण उन्होंने अब रैकार्ड किये हैं। हमारे विचारों का नक्शा होता है। जहां जहां अनुकूल मस्तिष्क इनको मिलता है वहां प्रभाव करते हैं। लोग चन्द्रमा पर गये। पालकी में थे। पृथ्वी से उनके साथ वस्तुओं का मार्ग स्थित। यदि वह न भी सुनते तो इसका यह अर्थ नहीं कि विचार या समाचार वहाँ नहीं पहुंचे। इसलिये हमेशा मन कर्म और बचन से शुद्ध रहो। हमारे ऋषियों का का और यही सन्तों का मार्ग है। जो कुछ हम कहते हैं या विचार करते हैं इसका फल हमको भोगना पड़ेगा। दाता दयाल का शब्द है।

ऐ मेरे प्यारे भाई, देख सँभल के चलना।
खोटे करम न करना, खोटी न बात कहना॥

दुख दोगे दुख मिलेगा, सुख दोगे सुख मिलेगा।
मारोगे तुम किसी को, फिर गम पड़ेगा सहना॥

कौल व ख्याल करतब, दरिया से हैं मुशाबा।
तुम देखना न इनकी लहरों में पड़के बहना॥

मन इन्द्रियों पै भाई, जब्त रखना तुम बराबर।
जीवित बने रहोगे, खुशहाल होके रहना ।।
अपनी न शिश्त रखना तुम आत्मा पै हरदम।
आतम स्वरूप रह कर, संसार में विचरना ।।

मुझे याद है कि मैंने एक पुस्तक 'रीयलइन्डैन्पेन्स' सन १९४७ ई० लिखी थी। उसका हिन्दी में अनुवाद हुआ जिसका नाम 'विश्व-शान्ति' है। उसमें मैंने लिखा था कि महात्मा गांधी को गोली क्यों लगी ? इसका कारण बताया है। उसमें मैंने यह भी लिखा था कि इस समय के जो हमारे विचार हैं यह देश में तरह तरह की आपत्तियां लायेंगे। आज शत प्रतिशत वह ठीक होरहा है। इसलिये मैं जो कुछ भी कहता हूं। यद्यपि मेरा अनुभव ठीक सिद्ध होता है लेकिन फिर भी मुझे किसी बात का दावा नहीं है।

संसार में सुखी रहने के लिये तो जो मैंने अनुभव किया वह बता दिया। अब रह गया यह कि निर्वाण कैसे मिलता है इसका मुझे पता नहीं। दूसरे सन्तों को निर्वाण कैसे मिला और मिला भी या नहीं मिला, मुझे कोई पता नहीं। मैं सत्य प्रिय मनुष्य हूं। यदि पर्दा रखता तो दूसरे सन्तों की तरह मैं भी बहुत बड़ा डेरा बना लेता लेकिन मैं डर गया। मैंने यह काम नहीं किया। क्यों ? यदि मैं आपको बात नहीं बताता और कहता हूं कि हां मैंने आपको पुत्र दिया या दवा दी तो मेरा क्या परिणाम होगा। इसलिये पिछले सन्तों ने यदि अपने डेरों के चलाने के लिये पर्दा रक्खा तो इनमें से कोई भी निर्वाण को प्राप्त नहीं हुआ। निर्वाण क्या है ? मुझे निर्वाण दिलाने वाले आप लोग हैं। आपके अनुभवों से बात समझ में आगई गुरु पदवी पर आने से मुझे निर्वाण का पता लग गया। ज्ञान होगया कि अन्तर में कौन जाता है ? न मैं न कोई और गुरु किन्तु वह जाने वाला या प्रगट होने बाला तुम्हारा अपना ही विश्वास है या वह संस्कार हैं जो तुम्हारे दिमाग पर पड़े हुये हैं। (शेषफिर)

महर्षि शिवव्रतलाल कृत हिन्दी पुस्तकें

आध्यात्मिक पुस्तकें

सम्पूर्ण महारामायण	८)
श्री भद्भगवद्गीता भाग १	१)५०
,, भाग २	१)५०
नानक योग ३ भाग	४)
राधास्वामी योग ६ भाग	८)
कबीर योग प्रथम भाग	२)५०
,, द्वितीय भाग	२)७५
,, तृतीय भाग	१)७५
कबीर आद्य ज्ञान प्रकाश	३)
शरणागति योग	)७५
उपासना योग	१)
कर्म रहस्य	१)
आनन्द योग प्रकाश	२)५०
Light on Anand yog	३)
पंथ संदेश	३)
सहज भक्ति	१)
आत्मिक प्रायमर	१)
दयाल योग (उर्दू)	२)५०

उच्चकोटि के उपन्यास

शाही पति परायण	२)
शाही भूत	१)५०
शाही डाकू	२)७५
शाही लकड़हारा	३)७५
शाही भिखारी	३)५०
शाही जादूगरनी	२)५०
आबदार मोती	२)२५
ताबदार मोती	२)२५
झलकदार मोती	२)५०
गिरहदार मोती	१)२५
रंगदार मोती	२)५०
दलदार मोती	३)
कजदार मोती	२)५०
चमकदार मोती	२)२५
हिंसक मोती	२)५०
ओ३म नाविल	३)
शाही भक्तिनी	२)५०
शिवजी की अद्भुत कहानी	१)५०
सिंघ देश की कहानियाँ	१)२५

पाठ तथा गाने के शब्द

शिव शब्द सागर सजिल्द भाग १ व २	७) ७)
फकीर भजनावली	१)२५
शब्द गुंजार भाग १, २, ३,	५)
शब्दों का गुटका	)५०
नन्दू भाई की साखी	१)५०
पिंगल साखी	१)
सन्त कबीर की साखी	३)
कबीर गूढ़ शब्द व्याख्या	१)
कबीर शब्दावली	२)
नैय्यरे आजम	१)५०
रहिमन नीति दोहावली	)७५
सन्त शब्दावली	१)५०

Regd. No. L-ALG-28

महारामायण सजिल्द	८-००
गीता भाग १ व २	४-००
नानक योग	५-००
राधास्वामी योग	८-००
कबीर योग भाग १,२,३	७-००
कर्मयोग रहस्य	१-००
Light on Anand Yog	३-००
आनन्द योग प्रकाश	२-५०
कबीर आद्य ज्ञान प्रकाश	२-५०
कबीर की साखी	३-००
पंथ सन्देश	३-००
शब्द गुञ्जार भाग १,२ ३	६-५०
विचार शक्ति अथवा मनोविज्ञान	२-००
विचार दर्पण	१-५०
फकीर भजनावली	१-००
जीवन सुधार	१-२५

शिक्षाप्रद, रोमाचकारी मोती और शाही सिलसिले के उपन्यास हैं

नई पुस्तकें

निर्वाण	३-००
सहज भक्ति	१-००
उस घर की खोज	१-००
अनुभव ज्ञान प्रकाश	१-००
हिंसक मोती	२-००
ज्ञान योग	१-५०

397. C. Gajraj Mysker Hindi-Pandit
Rathode Building
Pochamma Gali
Jumerat Bazar
Nizamabad (A.P.)

27-11-74
NIZAMABAD

Printed by S.C. Mital, Dayal Printing Press, Aligarh